OM 21 DELHI_Page 1 and 2 14/01/2015 07:53 Page 9

कथा सरिता

कोई विकल्प नहीं

कंफ्यूशियस के विद्वान शिष्य चांग-हो भ्रमण पर थे। जब वे ताईवान पहुँचे तो वहाँ गांव में उन्होंने एक विशाल हरे-भरे बगीचे में किसान को कुएं से पानी खींचकर पौधों को सींचते देखा। कड़ी मेहनत के कारण उसके माथे से पसीने के रेले बह रहे थे, लेकिन वह प्रसन्नता से अपना कार्य कर रहा था। चांग-हो को उस पर दया आई। उन्होंने लकड़ी की घिरी लगाकर कुएं से पानी निकालने का एक सरल यंत्र बना दिया। पानी पेड़ों तक पहुँचाने के लिए मोटे बांसों को काटकर उनकी नालियां बना दीं। अगले दिन चांग-हो ने पानी निकालने के लिए भाप की मशीन बनाई व इससे किसान को बेहतर जीवन जीने का संदेश देकर आगे निकल गए।

कई वर्ष बाद जब वे उस क्षेत्र से गुजरे तो उन्हें उस किसान से भेंट कर उसका हाल-चाल जानने की इच्छा हुई। वहाँ पहुँचे तो पाया बगीचा सूखा था और किसान कमज़ोर हालत में एक खटिया पर पड़ा था। चांग-हो ने हंसते हुए किसान से पूछा-भाई, मैंने तो तुम्हारे लिए समय और यत्न की बचत करने वाला बढ़िया यंत्र बनाकर दिया था और तुम्हारी क्या हालत हो गई है? क्या तुम्हें बराबर आराम नहीं मिलता? किसान की पत्नी आकर खड़ी हो गई और बोली-महाशय, आपने जब से यह यंत्र बनाकर दिया है, तभी से इनकी ऐसी हालत हुई है। यंत्र लग जाने के बाद ये परिश्रम से विमुख हो गए और आलस्य से घिर गए। खाली बैठे-बैठे कई बेकार की चिंताओं में डूबे रहते हैं और बीमार भी रहते हैं। चांग-हो को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने किसान दंपति से माफी मांगी और यह बात मानी की यदि किसान को स्वस्थ और प्रसन्न रहना है तो परिश्रमपूर्वक निकाले जल से बगीचे को सींचना ज़रूरी है। तंदरुस्ती और प्रसन्नता के लिए शारीरिक श्रम आवश्यक है। श्रम से मिलने वाले आनंद का विकल्प मनोरंजन का कोई साधन नहीं बन सकता।

सर्वस्व समर्पण ही प्रेम

एक नवयुवक किसी संत के पास खुदा को पाने की प्रार्थना लेकर पहुँचा। युवक की तलाश सच्ची थी। संत ने उसे कुछ देर देखा और कहा-तुम जाओ और पहले प्रेम करना सीखकर आओ, तब मैं तुमसे बात करूंगा। नवयुवक प्रेम की तलाश में देश-विदेश फिरने लगा। एक दिन वह किसी नगर से गुज़र रहा था कि उसे राजमहल के झरोखे में एक अत्यंत सुंदर युवती दिखाई पड़ी। वह शहजादी थी जो अपने सौन्दर्य के लिए विख्यात थी। उसपर दृष्टि पड़ते ही युवक उसके प्रेमपाश में पड़ गया। वह झरोखे को देखते सड़क पर तीन दिन तक खड़ा रहा। युवक की हालत के चर्चे शहर भर में होने लगे। लोगों को यह समझने में देर न लगी कि युवक की ऐसी हालत राजकुमारी के प्रेम में हुई है।

बात बादशाह तक पहुँची तो उसने युवक को दरबार में बुलवाया। युवक के सामने शर्त रखी कि यदि वह राजकुमारी से सच्चा प्रेम करता है तो किले के परकोटे से कूदकर दिखाए। यदि वह ऐसा करने में सफल रहा तो उसकी शादी शहजादी से कर दी जाएगी। युवक प्रेम की गहराई में डूबा हुआ था, सो वह कूदने के लिए तत्काल तैयार हो गया। उसने परकोटे की ओर भागकर नीचे छलांग लगा दी। नीचे संत ने कपड़ों से भरी एक झोली लगवा रखी थी। युवक उसमें ही गिरा और उसका जीवन बच गया। सब लोग नीचे उतरे तो बादशाह ने युवक से शहजादी की शादी करने को कहा।

युवक ने संत की ओर देखा और कहा-मैं प्रेम सीखने के लिए आया था और मुझे वह आ गया, शादी की मेरी कोई कामना नहीं है। यह कहकर वह संत के साथ चला गया। प्रिय वस्तु के लिए सर्वस्व समर्पण ही प्रेम है। अध्यात्म भी प्रेम का मार्ग है और जब व्यक्ति स्वयं को परमात्मा में समर्पित करने के लिए तैयार हो जाता है तो वह अपनी मंजिल भी पा लेता है।

प्रेरणा के लिए ज़रूरी संवेदी मन

काशी नरेश की कन्या वेद शास्त्रों की ज्ञाता थी। यह समय वह था, जब सारे देश में बुद्ध का आकर्षक संदेश पलायनवादी विचारकों का पोषक बन गया था। राजकन्या का अधिकांश समय भी शास्त्र चर्चा में व्यतीत होता। धर्म और अध्यात्म के सम्यक स्वरूप को जनता के सामने लाने के लिए दिन-रात उसका चिंतन चलता रहता था। एक प्रातः इसी विचार में वह राजमहल की खिड़की से देख रही थी। नीचे मुख्य मार्ग से आ-जा रही प्रजा में गृहस्थ कम, भिक्षु ही अधिक दिख रहे थे।

लोक जीवन में धर्म के नाम पर फैली इस निष्क्रियतावादी सोच के प्रभाव पर वह विचार कर रही थी, तभी नीचे से एक किशोर ब्रह्मचारी गुजरा। वह बटुक अत्यंत मेधावी कुमारिल भट्ट था। राजकुमारी की आँखों से आँसू की बूंद ब्रह्मचारी के कंधे पर गिरी। उसने ऊपर देखा तो उसे आँसू बहाते देख बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके कारण पूछने पर राजकुमारी ने कहा-यहाँ समाज को देखकर मुझे वैदिक परंपरा के लुप्त होने का भय सता रहा है। क्या इस भारतवर्ष में ऐसा कोई नहीं, जो समाज को वैदिक ज्ञान से नई दिशा दे और धर्म के सही स्वरूप को स्थापित करे? कुमारिल को राजकुमारी के वैचारिक स्तर का ज्ञान हो गया। उन्होंने वहीं प्रतिज्ञा ली कि वे शास्त्रार्थ में वैदिक दर्शन से सभी मतों का खंडन कर ही दम लेंगे। उन्होंने तक्षशिला जाकर बौद्ध दर्शन का संपूर्ण अध्ययन किया। वहीं से उन्होंने बौद्ध विद्वानों को शास्त्रार्थ में हराना आरंभ किया।

तक्षशिला से आरंभ हुई विजय यात्रा भारतवर्ष में घूमी और वैदिक परंपरा का पुनरुत्थान संभव हुआ। कुमारिल की संवेदनशीलता ने एक राजकन्या के आंसुओं से प्रेरणा पाकर एक कठिन दौर में अपने योगदान से सनातन परंपरा की रक्षा की। प्रेरणा ग्रहण करने के लिए संवेदनशील मन की आवश्यकता होती है। ऐसे मन में ज्ञान की एक विशेष चेतना होती है, जिसके कारण वह समसामयिक समय में अपनी भूमिका तलाश लेता है।

परमेश्वर की कृपा समान

एक सरल और धार्मिक व्यक्ति था। कठोर मेहनत से उसने अपने खेत को एक बहुत खूबसूरत बाग में तबदील कर दिया। एक दिन जब वह बाग में फल तोड़ने गया, तो उसने किसी अजनबी को पेड़ पर बैठे फल तोड़ते देखा। उसने चिल्लाते हुए कहा-तुम यहाँ पेड़ पर क्या कर रहे हो? अजनबी ने कोई जवाब नहीं दिया। बाग के मालिक का क्रोध बढ़ा उसने कहा-यह क्या बात है कि पेड़ों की साल भर देख-रेख मैं करूँ और फल तुम लेकर जाओ। तुम्हें इस प्रकार फल ले जाने की इजाजत किसने दी, तुम अभी नीचे उतरो। अजनबी ने कहा, मैं नीचे क्यों आऊँ, यह बगीचा परमेश्वर का है और मैं उसका सेवक हूँ। इस नाते मैं फल तोड़ रहा हूँ।

बगीचा मालिक ने योजना बनाई। उसने अपने लड़के को रस्सी लाकर उससे अजनबी को पेड़ के तने से बांधने को कहा। उसने एक लाठी उठाई और अजनबी की पिटाई शुरु कर दी। अजनबी चीखने-चिल्लाने लगा। वह बोला- आप मुझे क्यों मार रहे हैं? आपको मुझे मारने का कोई हक नहीं है। बगीचे के मालिक ने पिटाई जारी रखी।

अजनबी रोते हुए बोला-एक निरपराध आदमी को इस बेदर्दी से मारते हो तुम्हें खुदा का खौफ नहीं? मालिक बोला-मैं क्यों डरूँ, यह बगीचा, यह लाठी और मेरे हाथ सब परमेश्वर की ही तो मिलकियत है, सही-गलत वह जाने। अजनबी ने गलती मानी, तब उसे उसके मालिक ने घर रवाना किया। कई बार लोग नाजायज तरीके से दूसरों की वस्तुओं को हड़पने के लिए परमेश्वर का बहाना बनाते हैं। नितांत अनैतिक कार्यों को वे परम नैतिकता से मिलाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। उन लोगों के लिए जवाब वही है जो बगीचा मालिक ने दिया क्योंकि यदि गलत कामों को जायज ठहराने के लिए परमात्मा का उदाहरण दिया जा सकता है, तो गलत कार्य करने वाले को दंड देने के लिए तो निश्चित ही उनका सहारा लिया जा सकता है।

बिहार शरीफ-नालंदा। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'ओम शान्ति कुंज भवन' का उद्घाटन करते हुए बिहार ग्राम विकास संसदीय मंत्री श्रवण कुमार। साथ हैं ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य।

बुरला-ओडिशा। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम के अवसर पर ब्र.कु. राम प्रकाश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेहा। साथ हैं स्वामी आत्मानंद सरस्वती जी,शिवानंद आश्रम प्रमुख।

गोण्डा-उ.प्र.। मूल्यनिष्ठ आध्यात्मिक शिक्षा कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्ववित्त पोषित विद्यालयों के प्रबन्धक संघ के जिला अध्यक्ष मो. कारी अबरार जिलानी। साथ हैं ब्र.कु.दिव्या, ब्र.कु. राकेश व अन्य।

मौड़ मण्डी-भटिंडा। सरकारी कन्या विद्यालय के प्रिन्सीपल जगबीर सिंह ब्र.कु. नीलम को सम्मानित करते हुए।

नवरंगपुर-ओडिशा। जिलापाल शादिक आलाम को ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. नमिता।

जयपुर-राजा पार्क। विधायक कैलाश वर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपिका। साथ हैं ब्र.कु. दिव्या तथा अन्य।